अध्याय 33

परमेश्वर के बारे में एलीहू के विचार (भाग 1)

अंत में अपने तर्क बताना आरम्भ करने से पहले एलीहू ने पद्य के आरम्भ में (33:1–7) अध्याय 32 से अपने विचार को आगे बढ़ाया। पहले उसने परमेश्वर के विरुद्ध अय्यूब के कुछ आरोपों को दोहराया (33:8–12)। फिर एलीहू ने अय्यूब को परमेश्वर की महानता याद दिलाई और दावे से कहा कि परमेश्वर दर्शनों और स्वप्नों में (33:13–18); ताड़ना के द्वारा (33:19–22); और दूत के द्वारा (33:23–28)। मनुष्य के साथ सचमुच में बात करता है। परमेश्वर मनुष्य को अपनी ओर वापस लाने के लिए अक्सर इन ढंगों का इस्तेमाल करता है (33:29–33)।

एलीहू की खरी बातें (33:1–7)

[1]''तौभी हे अय्यूब! मेरी बातें सुन ले, और मेरे सब वचनों पर कान लगा। [2]मैं ने तो अपना मुँह खोला है, और मेरी जीभ मुँह में चुलबुला रही है। [3]मेरी बातें मेरे मन की सिधाई प्रगट करेंगी; जो ज्ञान मैं रखता हूँ उसे खराई के साथ कहूँगा। [4]मुझे परमेश्वर के आत्मा ने बनाया है, और सर्वशक्तिमान की साँस से मुझे जीवन मिलता है। [5]यदि तू मुझे उत्तर दे सके, तो दे; मेरे सामने अपनी बातें क्रम से रचकर खड़ा हो जा। [6]देख, मैं परमेश्वर के सन्मुख तेरे तुल्य हूँ; मैं भी मिट्टी का बना हुआ हूँ। [7]सुन, मेरे डर के मारे तुझे घबराने की आवश्यकता नहीं है, और न तू मेरे बोझ से दबेगा।''

आयत 1. एलीहू ने आगे कहा, **''तौभी हे अय्यूब! मेरी बातें सुन ले, और मेरे सब वचनों पर कान लगा।''** जॉन ई. हार्टले ने ध्यान दिलाया है, ''*अय्यूब* को नाम से सम्बोधन करते हुए वह किसी शीर्षक का इस्तेमाल नहीं करता, जो किसी व्यक्ति के पद या प्रतिष्ठा के प्रति अपमान को दिखाता है।''[1] हमारे लिए चाहे एलीहू का इस प्रकार से बात करता थोड़ा बुरा लगे पर यह सच्चे और चापलूसी न करने वाला होने के उसकी वचनबद्धता को दिखाता है (32:21, 22)।

जेम्स बर्टन कॉफमैन का विचार था कि एलिहू ''अय्यूब का नाम ऐसे लेकर जैसे किसी दोस्त का या किसी छोटे व्यक्ति का हो, यानी कुछ ऐसा जिससे अय्यूब के तीनों मित्र पूरी पुस्तक में बचते रहे, [एलीहू] कृपा दिखा रहा था।''[2] अपने उपदेश के दौरान एलीहू ने नौ बार अय्यूब का नाम लेकर सम्बोधित किया (32:12; 33:1, 31; 34:5, 7, 35, 36; 35:16; 37:14)। ऐसा लगता कि उसने ऐसा मित्रों से अलग करने के साथ-साथ अय्यूब का ध्यान खींचने के लिए भी किया। साहित्य दृष्टिकोण से विलियम डी. रेबर्न ने देखा कि अय्यूब के नाम का ''इस्तेमाल एलीहू के मुख्य पात्र को एलीहू के लम्बे भाषण दिए जाने पर फोकस रखने का काम करता है जो अब शांत हो चुका था, पाठक के दिमाग से न निकले।''[3]

एलीहू ने अय्यूब से आग्रह किया कि उसके उपदेश को ध्यान से ''सुनो'' (देखें 32:10)। क्रिया शब्द ''सुन'' (*'azan, आज़ान*) का सम्बन्ध संज्ञा शब्द ''कान'' (*'ozen, ओज़ेन*) से है।[4]

आयतें 2, 3. ''मैं ने तो अपना मुँह खोला है, और मेरी जीभ मुँह में चुलबुला रही है। मेरी बातें मेरे मन की सिधाई प्रगट करेंगी; जो ज्ञान मैं रखता हूँ उसे खराई के साथ कहूँगा।'' यह शब्द चाहे व्यर्थ लग सकते हैं पर इनसे संकेत मिलता है कि एलीहू एक गम्भीर युवक था जिसने कम से कम परमेश्वर के प्रति गहरा सम्मान दिखाया (देखें 32:8, 22)। रॉबर्ट एल. आल्डन ने लिखा है, ''खराई के ऐसे ही दावे अय्यूब ने भी किए थे (6:28; 27:4)।''[5]

आयत 4. ''मुझे परमेश्वर के आत्मा ने बनाया है, और सर्वशक्तिमान की साँस से मुझे जीवन मिलता है।'' आयतें 4 और 6 की भाषा उत्पत्ति 2:7 का स्मरण दिलाती हैं: ''और यहोवा परमेश्वर ने आदम को भूमि की मिट्टी से रचा और उसके नथनो में जीवन का श्वास फूंक दिया; और आदम जीवता प्राणी बन गया।'' इस घोषणा के साथ एलीहू ने इस बात पर ज़ोर दिया कि वह अय्यूब के जैसा ही था। एलीहू के छोटा होने के बावजूद उसकी बातें अय्यूब के ध्यान देने के योग्य थीं।

आयत 5. इस आयत में तीन आदेशसूचक (आज्ञाएं) मिलती हैं। **''यदि तू मुझे उत्तर दे सके, तो दे।''** ''उत्तर'' क्रिया शब्द *shub* (*शब*) का अनुवाद है जिसका अर्थ आम तौर पर ''वापस करना'' होता है। एलीहू ने अय्यूब को उसके तर्कों का उत्तर देने की चुनौती दी कि वह या तो उनका खण्डन करे या उन्हें मान ले। **''मेरे सामने अपने क्रम से रच।''** ''अपनी बातें'' इब्रानी धर्मशास्त्र में नहीं है और अनुपयुक्त प्रतीत होता है क्योंकि एलीहू केवल अय्यूब से बात कर रहा है। NIV में ''*अपने आपको* तैयार कर'' है जबकि NRSV में है ''*अपनी बातें* ठीक कर'' है (महत्व जोड़ें)। इस संदर्भ में ''रच'' (*'arak, आराक*) का अर्थ किसी वकील की तरह ''संवारना या व्यवस्थित करना''[6] (32:14 पर टिप्पणियां देखें)। **''खड़ा हो जा।''** एलीहू ने अय्यूब से अपनी बात पर टिके रहने, अपनी ज़मीन पर खड़े रहने को कहा।

आयत 6. ''देख, मैं परमेश्वर के सन्मुख तेरे तुल्य हूँ; मैं भी मिट्टी का बना हुआ हूँ।'' सृष्टि की उत्पत्ति की ओर इशारा करते हुए एलीहू ने अय्यूब को फिर से याद दिलाया कि वह परमेश्वर के सामने एक जैसे थे। TEV में है, ''तुम और मैं परमेश्वर की दृष्टि में एक जैसे हैं।'' ''बना हुआ'' इब्रानी शब्द *qarats* (*.क़राटज़*) से लिया गया है और इसका अधिक अक्षरश: अर्थ ''काटा हुआ'' (NJPSV) या ''चुटकी भरा'' हो सकता है।[7] यह रूपक कुमहार के किसी चीज़ को बनाने के लिए मिट्टी को हाथ में लेने का है। यह भाषा ढेर में से मिट्टी के टुकड़े को लेना या ''पिंच पौट'' तकनीक हो सकती है। पवित्र शास्त्र में एक अन्य जगह पर परमेश्वर को कुम्हार से मिलाया गया है जबकि मनुष्यजाति को मिट्टी के बर्तनों से जिन्हें उसने बनाया है (यशायाह 29:16; 45:9; 64:8; यिर्मयाह 18:6; रोमियों 9:20, 21)।

आयत 7. एलीहू अय्यूब के जैसा ही नाशवान मनुष्य था, उसे भी मिट्टी से आकार दिया गया था, इसलिए अय्यूब को **डर**ने की कोई आवश्यकता नहीं थी। अय्यूब ने पहले परमेश्वर का अपना डर जताया था: ''वह अपना सोंटा मुझ पर से दूर करे और उसकी भय देनेवाली बात मुझे न घबराए'' (9:34); ''अपनी ताड़ना मुझ से दूर कर ले, और अपने भय से मुझे भयभीत न कर'' (13:21); और ''क्योंकि ईश्वर के प्रताप के कारण मैं ऐसा नहीं कर सकता था, क्योंकि उसकी

ओर की विपत्ति के कारण मैं भयभीत होकर थरथराता था'' (31:23)। एलीहू ने अय्यूब को यह आश्वासन देते हुए कि उनका वाद विवाद निष्पक्ष और धमकी रहित होता है, अय्यूब को शांति देने वाली बात कही। निश्चय ही उसने अपने आपको मित्रों से योग्य विरोधी के रूप में देखा।

परमेश्वर के विरुद्ध अय्यूब के आरोपों का दोहराया जाना (33:8-12)

[8]''निःसन्देह तेरी ऐसी बात मेरे कानों में पड़ी है और मैं ने तेरे वचन सुने हैं, [9]'मैं तो पवित्र और निरपराध और निष्कलंक हूँ; और मुझ में अधर्म नहीं है। [10]देख, वह मुझ से झगड़ने के दाँव ढूँढ़ता है, और मुझे अपना शत्रु समझता है; [11]वह मेरे दोनों पाँवों को काठ में ठोंक देता है, और मेरी सारी चाल की निगरानी करता है।' [12]देख, मैं तुझे उत्तर देता हूँ, इस बात में तू सच्चा नहीं है। क्योंकि परमेश्वर मनुष्य से बड़ा है।''

आयत 8. एलीहू ने पहले संकेत दिया था कि वह अय्यूब और तीनों मित्रों के भाषणों को धीरज से सुन रहा था (32:11, 12)। यहां पर उसने केवल **वचनों** पर फोकस रखा।

आयत 9. अंत में एलीहू अय्यूब के तर्कों का खंडन करने के लिए उनकी समीक्षा करने लगा। '''**मैं तो पवित्र और निरपराध और निष्कलंक हूँ; और मुझ में अधर्म नहीं है।**''' अय्यूब ने अपने प्रश्नों में बिना कहे पाप से इनकार किया था: ''मुझ से कितने अधर्म के काम और पाप हुए हैं? मेरे अपराध और पाप मुझे जता दे'' (13:23)। मेरबिन एच. पोप ने टिप्पणी की है:

> एलीहू के उदाहरण वास्तव में सही हैं परन्तु इसमें थोड़ा सा अनुचित घुमाव है। अय्यूब ने छोटी-छोटी मानवीय त्रुटियों को माना [7:21; 13:26]. अय्यूब की शिकायत का अर्थ यह है कि उसने कभी इतने गम्भीर पाप नहीं किए थे कि उसे उनकी ऐसी भयानक सजा मिले।[8]

आयत 10. '''**देख, वह मुझ से झगड़ने के दाँव ढूँढ़ता है, और मुझे अपना शत्रु समझता है।**''' अय्यूब ने परमेश्वर से पूछा था, ''तू किस कारण अपना मुंह फेर लेता है, और मुझे अपना शत्रु गिनता है?'' (13:24)। इसके अलावा परमेश्वर ने उस ''पर अपना क्रोध भड़काया और अपने शत्रुओं में गिनता'' था (19:11)। अय्यूब ने कहीं भी साफ़ साफ़ यह नहीं कहा कि परमेश्वर ने उसके ''विरुद्ध छल किया था,'' परन्तु यह भाषा कुछ कुछ 10:13-17 वाली लगती है।

आयत 11. '''**वह मेरे दोनों पाँवों को काठ में ठोंक देता है, और मेरी सारी चाल की निगरानी करता है।**''' यह कथन अय्यूब के कथन से ही लिया गया है: ''तू मेरे पांवों को काठ में ठोंकता, और मेरी सारी चाल चलन देखता रहता है; और मेरे पांवों के चारों ओर सीमा बान्ध लेता है'' (13:27)। अय्यूब को लगा कि उसे किसी तरह फंसा दिया गया है जिससे उसे कभी राहत नहीं मिलेगी।

आयत 12. एलीहू ने इस बात को नकारा कि अय्यूब ने जो कुछ कहा था वह **सच्चा** था। हार्टले ने बताया है, ''इस पद्य में एलीहू और मित्रों में अंतर स्पष्ट है: पिछले कुछ गुप्त पापों के बजाय वह यह तर्क देगा कि अय्यूब परमेश्वर के विरुद्ध अपनी निर्लज शिकायतों में गलत था।''[9]

क्योंकि परमेश्वर मनुष्य से बड़ा है, इसलिए मनुष्य उसके मार्गों और विचारों की थाह पाने की कल्पना भी नहीं कर सकता।

''परमेश्वर स्वप्नों और दर्शनों के माध्यम से बात करता है'' (33:13–18)

[13]''तू उससे क्यों झगड़ता है कि वह अपनी किसी बात का लेखा नहीं देता? [14]क्योंकि परमेश्वर तो एक क्या वरन् दो बार बोलता है, परन्तु लोग उस पर चित्त नहीं लगाते। [15]स्वप्न में, या रात को दिए हुए दर्शन में, जब मनुष्य घोर निद्रा में पड़े रहते हैं, या बिछौने पर सोते समय, [16]तब वह मनुष्यों के कान खोलता है, और उनकी शिक्षा पर मुहर लगाता है, [17]जिससे वह मनुष्य को उसके संकल्प से रोके और गर्व को मनुष्य में से दूर करे। [18]वह उसके प्राण को गढ़हे से बचाता है, और उसके जीवन को तलवार की मार से बचाता है।''

आयत 13. ''तू उससे क्यों झगड़ता है कि वह अपनी किसी बात का लेखा नहीं देता?'' क्रिया शब्द ''झगड़ता है'' (*rib, रिब*) का अनुवाद ''लड़ता'' भी हो सकता है जैसे कानूनी मुकद्दमे में (9:3 पर टिप्पणियां देखें)। हार्टले ने निष्कर्ष निकाला, ''एलीहू के विचार से परमेश्वर के साथ झगड़ना बड़ी गुस्ताखी वाला पाप है।''[10]

NASB में दूसरी पंक्ति का अनुवाद यह कहता है कि परमेश्वर अपने कामों के लिए मनुष्य को जवाबदेह नहीं है। इब्रानी धर्मशास्त्र का अनुवाद ''वह उसकी [मनुष्य की] सब बातों का उत्तर नहीं देगा भी हो सकता है'' (देखें TEV; NIV; NJPSV) यानी यह कि परमेश्वर मनुष्य के सारे प्रश्नों का आरोपों का उत्तर नहीं देगा। अय्यूब ने कई बार परेशानी जताई थी कि परमेश्वर उसके दु:ख का कारण न बताकर छुपा और खामोश रहा था (19:7; 23:3, 8, 9; 30:20; 31:35)।

आयत 14. एलीहू ने अय्यूब के इस विचार को नहीं माना कि परमेश्वर खामोश रहता है। उसने दावा किया कि **परमेश्वर** बार–बार **बोलता** है चाहे उसके संदेशों को आम तौर पर नज़रअंदाज़ कर दिया जाता है। **एक क्या वरन दो बार** वाक्यांश के सम्बन्ध में, रेबर्न ने समझाया है, ''एलीहू यहां पर छंद का तरीका अपना रहा है जिसमें दो अंकों में से दूसरा अंक हमेशा पहले वाले से बड़ा होता है। इस तरीके का इस्तेमाल किसी चीज़ को बारम्बार 'बार–बार' करने के विचार को दिखाने के लिए होता है, जैसे TEV में कहा गया है।''[11]

आयत 15. यहां पर एलीहू परमेश्वर के मनुष्यजाति के साथ अपनी इच्छा को पहुंचाने परमेश्वर द्वारा इस्तेमाल किए गए कुछ माध्यमों की चर्चा करने लगता है। **''स्वप्न में, या रात को दिए हुए दर्शन में, जब मनुष्य घोर निद्रा में पड़े रहते हैं, या बिछौने पर सोते समय।''** अपने पहले भाषण में एलीपज ने ऐसा ही संदेश पाने का दावा किया (4:12–17):

> ''एक बात चुपके से मेरे पास पहुंचाई गई, और उसकी कुछ भनक मेरे कान में पड़ी। रात के स्वप्नों की चिन्ताओं के बीच जब मनुष्य गहरी निद्रा में रहते हैं, मुझे ऐसी थरथराहट और कंपकंपी लगी कि मेरी सब हड्डियां तक हिल उठीं। तब एक आत्मा मेरे साम्हने से होकर चली; और मेरी देह के रोएं खड़े हो गए। वह चुपचाप ठहर गई और मैं उसकी आकृति को पहचान न सका। परन्तु मेरी आंखों के सामने कोई रुप था; पहिले सन्नाटा

> छाया रहा, फिर मुझे एक शब्द सुन पड़ाः ‘क्या नाशमान मनुष्य ईश्वर से अधिक न्यायी होगा? क्या मनुष्य अपने सृजनहार से अधिक पवित्र हो सकता है?’’’

वास्तव में परमेश्वर सचमुच पुरखाओं के साथ बात करने के लिए स्वप्नों का इस्तेमाल करता था (उत्पत्ति 20:3; 28:11–16; 31:11–13, 24; 37:5–10; 40:5; 41:1–7; 46:2–4)। अय्यूब को स्वयं ऐसे स्वप्न और दर्शन मिले थे जिससे वह भयभीत हो गया था (7:14)। एलीहू अय्यूब को यह सुझाव दे रहा होगा कि उसे इन अनुभवों को परमेश्वर की ओर से प्रकाशनों के रूप में मानना चाहिए।

आयत 16. ‘‘तब वह मनुष्यों के कान खोलता है, और उनकी शिक्षा पर मुहर लगाता है।’’ ‘‘कान खोलता है’’ का अधिक अक्षरशः अनुवाद ‘‘कान का पर्दा हटाता’’ हो सकता था। एक इब्रानी मुहावरा किसी संदेश के प्रकट किए जाने पर पुराने नियम में कई बार मिलता है। ‘‘शिक्षा’’ इब्रानी शब्द *musar* (*मुसार*) से लिया गया है जिसका अनुवाद ‘‘ताड़ना’’ (5:17), ‘‘चितौनी’’ (20:3), या ‘‘ताड़ना’’ भी हो सकता है (यशायाह 26:16; 53:5)। यह नैतिक शिक्षा है[12] यानी ‘‘उपदेश रूपी ताड़ना’’ है। ‘‘मोहर’’ से किसी अनुबंध, वसीयतनामे, या करारनामे की पुष्टि होती थी जो उस दस्तावेज के प्रमाणिक होने को दिखाता था। कागज के रोल पर आम तौर पर मोम या मिट्टी से मुहर लगाई जाती थी, जिसके ऊपर मुद्रिका के साथ ठप्पा लगता था। परमेश्वर के संदेशों को ऐसे बताया गया है जैसे उनके ऊपर उसकी मुहर लगी हुई हो।

आयतें 17, 18. आयत 16 में परमेश्वर की शिक्षा का उद्देश्य **मनुष्य को** बुराई करने से रोकना और **गर्व को मनुष्य में से दूर** करना है। नीतिवचन 16:18 कहता है, ‘‘विनाश से पहले गर्व और ठोकर खाने से पहले घमण्ड आता है।’’ एलीहू ने दावा किया कि परमेश्वर के मार्ग पर लने से मनुष्य की उम्र बढ़ती है (देखें निर्गमन 20:12; व्यवस्थाविवरण 4:40; 5:16, 33; 6:1, 2)। यह उसे समय से पहले आने वाली मृत्यु से बचाता है, जिसका संकेत **गडहे** (*shachath, शाकाथ*) या ‘‘कब्र’’ (NLT) के द्वारा दिया गया है।

तलवार की मार विवादास्पद वाक्यांश का एक सम्भावित अनुवाद है ‘‘तलवार’’ (NASB में अधोलोक के लिए शियोल शब्द – अनुवादक) ‘‘नदी’’ शब्द की एक व्याख्या है (NEB; NRSV; NLT)। कुछ विद्वान इब्रानी शब्द *shelach* (*शेलाच*) जो जीवितों की भूमि से मृतकों के संसार में जाने वाले प्रतिकात्मक जलमार्ग को मानते हैं। परन्तु इब्रानी शब्द *सेलच* का अर्थ आम तौर पर हथियार होता है। हिंदी सहित कुछ संस्करणों में इसका अनुवाद ‘‘तलवार की मार’’ हुआ है (KJV; ASV; RSV; NIV; NKJV; NJPSV)। इससे लगभग मिलता इब्रानी वाक्यांश NASB में 36:12 में ‘‘तलवार से नष्ट’’ हुआ है।

‘‘परमेश्वर ताड़ना के द्वारा बात करता है’’ (33:19–22)

[19]‘‘मनुष्य की ताड़ना भी होती है कि वह अपने बिछौने पर पड़ा पड़ा तड़पता है, और उसकी हड्डी हड्डी में लगातार झगड़ा होता है, [20]यहाँ तक कि उसका प्राण रोटी से, और उसका मन स्वादिष्ट भोजन से घृणा करने लगता है। [21]उसका मांस ऐसा सूख जाता है कि दिखाई नहीं देता; और उसकी हड्डियाँ जो पहले दिखाई नहीं देती थीं निकल आती हैं। [22]तब

वह कबर के निकट पहुँचता है, और उसका जीवन नष्ट करनेवालों के वश में हो जाता है।''

स्वप्नों और दर्शनों के अलावा, मानवीय कष्ट को एक और तरीका माना जाता है जिससे परमेश्वर मनुष्य को अपना संदेश देता है। एलीपज ने पहले ही इस विचार को जताया था कि परमेश्वर गलत लोगों को ताड़ना देने या सुधारने के लिए पीड़ा का इस्तेमाल करता है (5:17-22 पर टिप्पणियां देखें)। यहां पर एलीहू ने बताया कि ताड़ना देने के लिए बीमारी और रोग का इस्तेमाल कैसे किया जा सकता है। एलीहू की बातों को सुनने वालों ने अय्यूब को उसकी निर्बल अवस्था में देखकर ऐसा ही माना होगा। इस पद्य में बताई गई सारी शिकायतें कभी न कभी अय्यूब की ही हैं।

आयत 19. ''मनुष्य की ताड़ना भी होती है कि वह अपने बिछौने पर पड़ा पड़ा तड़पता है, और उसकी हड्डी हड्डी में लगातार झगड़ा होता है।'' यह भाषा 30:17 में अय्यूब के विलाप का स्मरण दिलाती है: ''रात को मेरी हड्डियां मेरे अन्दर छिद जाती हैं और मेरी नसों में चैन नहीं पड़ती।'' अय्यूब ने यह शिकायत भी की कि उसकी ''हड्डियां जल गई'' थीं (30:30)।

आयत 20. ''यहाँ तक कि उसका प्राण रोटी से, और उसका मन स्वादिष्ट भोजन से घृणा करने लगता है।'' बीमारी और रोग से आम तौर पर आदमी की भूख मर जाती है और उसके ''खाने'' का स्वाद बदल जाता है। अय्यूब कहता था, ''मुझे रोटी खाने के बदले लम्बी लम्बी सांसे आती हैं'' (3:24)। एक और जगह उसने अपने भोजन को ''घिनौना'' बताया था (6:7)।

आयत 21. ''उसका मांस ऐसा सूख जाता है कि दिखाई नहीं देता; और उसकी हड्डियाँ जो पहले दिखाई नहीं देती थीं निकल आती हैं।'' बीमारी और कुपोषण से भार घट जाता है। अय्यूब कहता था, ''और उस ने जो मेरे शरीर को सुखा डाला है, वह मेरे विरुद्ध साक्षी ठहरा है, और मेरा दुबलापन मेरे विरुद्ध खड़ा होकर मेरे साम्हने साक्षी देता है'' (16:8); और ''मेरी खाल और मांस मेरी हड्डियों से सट गए हैं, और मैं बाल-बाल बच गया हूं'' (19:20)।

आयत 22. ''तब वह कब्र के निकट पहुँचता है, और उसका जीवन नष्ट करनेवालों के वश में हो जाता है।'' कमज़ोर होते होते अय्यूब मरने के निकट था। ऐसा लगता है कि एलीहू ने उसकी हालत को परमेश्वर की ओर से चेतावनी के रूप में समझा (33:17, 18 पर टिप्पणियां देखें)। ''जीवन नष्ट करने वालों'' का अनुवाद अलग-अलग रूप में ''जल्लादों'' (NKJV), ''विनाश करने वालों'' (KJV), ''मृत्यु के दूतों'' (NIV), और ''मृत्यु के स्वर्गदूतों'' (NLT) के रूप में हुआ है।

''परमेश्वर किसी दूत के द्वारा बात कर सकता है'' (33:23-28)

[23]''यदि उसके लिये कोई बिचवई स्वर्गदूत मिले, जो हज़ार में से एक ही हो, जो भावी कहे, और जो मनुष्य को बताए कि उसके लिये क्या ठीक है; [24]तो वह उस पर अनुग्रह करके कहता है, 'उसे गढ़हे में जाने से बचा ले, मुझे छुड़ौती का दाम मिल गया है। [25]उस मनुष्य की देह बालक की देह से अधिक स्वस्थ और कोमल हो जाए; उसकी जवानी के दिन फिर लौट आएँ।' [26]तब मनुष्य परमेश्वर से विनती करेगा, और वह उससे प्रसन्न होगा, वह आनन्द

से परमेश्वर का दर्शन करेगा, और वह मनुष्य को ज्यों का त्यों धर्मी कर देगा। [27]वह मनुष्य लोगों के सामने गाने और कहने लगता है, 'मैं ने पाप किया, और सच्चाई को उलट पुलट कर दिया, परन्तु उसका बदला मुझे दिया नहीं गया। [28]उसने मेरे प्राण को क़ब्र में पड़ने से बचाया है, मेरा जीवन उजियाले को देखेगा।'''

आयत 23. अनुवाद हुए **दूत** शब्द के इब्रानी शब्द का अनुवाद (*mal'ak, मालाक़*) को NASB में ''स्वर्गदूत'' हुआ है (अनुवादक)। वह कोई स्वर्गीय दूत हो सकता है, जैसे ''यहोवा का दूत'' जिसने हाजरा से बात की (उत्पत्ति 16:7-12) या कोई आदमी, जैसे अय्यूब के पास विपत्तियों का संदेश लाने वाले (1:14-19)। सेमुएल कॉक्स ने लिखा है,

> यहां पर इस्तेमाल हुआ शब्द ''स्वर्गदूत'' स्वर्गदूत के पद या कार्य को दर्शाता है और इसका अर्थ ''दूत,'' ''व्याख्या करने वाला,'' ''राजदूत,'' ''शिक्षक,'' ''नबी'' है। इसमें नाशवान या अनश्वर, कोई भी हो सकता है, जिसका काम अपने से बड़े की इच्छा की घोषणा करना और उसे समझाना और लागू करना है।[13]

ये दूत **बिचवई** या उन घटनाओं का ''व्याख्या करने वाला'' होगा जिनसे अय्यूब इतनी बुरी तरह परेशान था।

आयत 24. ''तो वह उस पर अनुग्रह करके कहता है, 'उसे गढ़हे में जाने से बचा ले, मुझे छुड़ौती का दाम मिल गया है।''' ''छुड़ौती'' (*koper, क़ोपेर*) का सम्बन्ध ''प्रतिभूति'' शब्द से है। *योनक़िपर* प्रायश्चित का दिन यानी यह ढांपने वाला दिन है। आल्डन ने ध्यान दिलाया,

> इन दोनों आयतों [33:23, 24] के कई शब्द धर्मशास्त्रीय रूप में नये नियम में लाधे जाते हैं: दूत, बिचवई, अनुग्रह, छुड़ौती। मसीही व्यक्ति, मसीह वह अनुग्रहकारी बिचवई है जो विश्वासी के प्राण को अनन्तकाल या अनन्तमृत्यु से छुड़ाता है।[14]

आयत 25. ''उस मनुष्य की देह बालक की देह से अधिक स्वस्थ और कोमल हो जाए; उसकी जवानी के दिन फिर लौट आएँ।'' 33:23 वाले दूत ने चंगाई और मृत्यु से छुटकारा दिलाने के लिए मुख्य स्त्रोत का काम करना था। पीड़ित ने अपने स्वास्थ्य और सामर्थ के वैसे ही लौट आने पर जैसे जवानी में था आनन्द करना था। आयत 25 की भाषा नामान कोढ़ी वाली भाषा जैसी ही है। यरदन नदी में सात बार डुबकी लगाने के बाद ''उसका शरीर छोटे लड़के का सा हो गया'' (2 राजाओं 5:14)।

आयत 26. चंगाई पाने वाले को छुड़ाए जाने के कारण आत्मिक नयापन भी मिलना था (33:24)। उसने अपने छुटकारे के लिए धन्यवाद देते हुए **परमेश्वर से विनती** करनी थी और परमेश्वर ने उसे धर्मी व्यक्ति मानकर उससे प्रसन्न होना था।

आयतें 27, 28. स्वस्थ हुए आदमी ने सरेआम लोगों के सामने गीत गाते हुए यह अंगीकार करना था कि उसने **पाप किया** था और परमेश्वर ने उसे मृत्यु से छुड़ा लिया था (देखें भजन संहिता 51:14, 15)। **वह मनुष्य लोगों के सामने गाने** के बजाय NKJV में वह मनुष्यों को देखता है। यह भिन्नता इब्रानी स्वरों के अलग-अलग संकेत के कारण: ''गाने'' (*yashir,*

यासिर) बनाम ''देखता'' (*yashor, याशोर*)।

इस पद्य की सारी पटकथा को पक्का करते हुए एलीहू का यह दावा था कि अय्यूब को अपने पापों से मन फिराकर परमेश्वर से प्रार्थना करनी चाहिए। यदि वह ऐसा करता तो उसे ''गढ़हे'' से बचकर उसने स्वस्थ हो जाना था।

''कई बार परमेश्वर यह सब करता है'' (33:29–33)

[29]''देख, ऐसे ऐसे सब काम परमेश्वर मनुष्य के साथ दो बार क्या वरन तीन बार भी करता है, [30]जिससे उसको क़ब्र से बचाए, और वह जीवनलोक के उजियाले का प्रकाश पाए। [31]हे अय्यूब! कान लगाकर मेरी सुन; चुप रह, मैं और बोलूँगा। [32]यदि तुझे कुछ कहना हो तो मुझे उत्तर दे; बोल, क्योंकि मैं तुझे निर्दोष ठहराना चाहता हूँ। [33]यदि नहीं, तो तू मेरी सुन; चुप रह, मैं तुझे बुद्धि की बात सिखाऊँगा।''

आयत 29. एलीहू ने दावा किया कि प्रकाशन के लिए जो तरीके उसने 33:13–28 में बताए थे (स्वप्न और दर्शन, दु:ख और दूत) वे मनुष्यजाति के प्रति परमेश्वर की सामान्य कार्यवाही थी। मूल अनुवाद **दो बार क्या वरन तीन बार** की जगह NASB में इसका अनुवाद ''कई बार'' हुआ है।

आयत 30. आयत 28 के चार शब्द वही हैं जो आयत 30 में मिलते हैं: **प्राण**, **कब्र**, **जीवन** और **उजियाला**।

आयतें 31, 32. आगे बढ़ने से पहले एलीहू ने अय्यूब से कहा कि **कान लगाकर**, **सुन**, और **चुप रह**। परन्तु ''[अय्यूब] ने कुछ कहना था तो एलीहू ने उसे बोलने का अवसर दिया।''[15] अय्यूब को सुनने की एलीहू की ताड़नाएं इस अध्याय की दीवारगीर हैं (33:1, 31–33)।

आयत 33. **''यदि नहीं, तो तू मेरी सुन; चुप रह, मैं तुझे बुद्धि की बात सिखाऊँगा।''** रेबर्न ने लिखा है ''*बुद्धि* ज्ञान या जानकारी से कहीं अधिक बढ़कर है। *बुद्धि* एक मनोभाव और अनुशासन है जो परमेश्वर की ओर से मिलता है।''[16] (''बुद्धि'' पर अधिक जानकारी के लिए 4:19–21; 11:6; 28:1–28 पर टिप्पणियां देखें।) एलीहू परमेश्वर की बुद्धि का भेद नहीं जानता था इसलिए उसने अपने ही मानवीय ज्ञान तथा बुद्धि से बात की जो अय्यूब की बुद्धि की तरह ही अचूक नहीं थी। परन्तु उसने परमेश्वर के तरीकों के लिए गहरे लगाव को दिखाया।

पुस्तक में तीन मित्रों के साथ पहले की बातचीत के कारण अय्यूब का खामोश रहना हैरान करने वाला लग सकता है। यह सुझाव दिया गया कि एलीहू ने वैसे ही उसे भी चुप करा दिया जैसे अय्यूब ने तीन मित्रों को चुप करवाया था। हार्टले ने यह कहते हुए इस विचार का खण्डन किया:

> बातूनी अय्यूब का चुप हो जाना विचित्र लग सकता है, पर यह पूरे कार्य के कथावस्तु का भाग है। अय्यूब ने परमेश्वर के सामने अपनी अंतिम विनती की है इसलिए वह मनुष्य की नहीं, बल्कि परमेश्वर के उत्तर की राह देखेगा। इसलिए यह नहीं सोचा जाना चाहिए कि एलीहू ने अय्यूब को चुप करा दिया है। फिर भी अय्यूब उत्तर नहीं देता इसलिए एलीहू थोड़ी देर के बाद अपना दूसरा भाषण शुरू कर देता है।[17]

प्रासंगिकता

मनुष्य के साथ परमेश्वर संवाद (33:13–28)

हमारे आधुनिक संसार में संवाद हमारे जीवनों का अत्यधिक महत्वपूर्ण भाग है। हम लोगों से फोन पर बात करते, ई–मेल भेजते, कार्ड और पत्र लिखते और दूसरों से आमने सामने बात करते हैं। हमें टैलिविज़न, रेडियो, समाचार पत्रों और पत्रिकाओं तथा मीडिया के अन्य स्रोतों के द्वारा भी संदेश मिलते हैं। हमारी संस्कृति में संवाद या संचार इतना महत्वपूर्ण है कि कॉलेज़ों तथा यूनिवर्सिटियों में भी इस विशेष विषय के लिए कोर्स और डिग्रियां करवाई जाती हैं। हमारा परमेश्वर संवाद या संचार करने वाला परमेश्वर है।

इब्रानियों 1:1 कहता है, ''पूर्व युग में परमेश्वर ने बाप–दादों से थोड़ा–थोड़ा करके और भांति–भांति से भविष्यवक्ताओं के द्वारा बातें कर'' (NIV)। परमेश्वर ने मसीह तक के समय कालों में अपने संदेश को पहुंचाने के लिए अलग–अलग माध्यमों का इस्तेमाल किया। अय्यूब 33 में एलीहू ने भी इस पर ज़ोर दिया कि परमेश्वर मनुष्यजाति तक अपनी इच्छा को पहुंचाने के लिए अलग–अलग ढंगों के द्वारा बात कर सकता था। अय्यूब ने यह शिकायत की कि परमेश्वर उसके प्रश्नों का उत्तर देने से इनकार करके, छिपा हुआ और खामोश है (19:7; 23:3–9; 30:20; 31:35)। ऐलीहू ने यह कहते हुए अय्यूब की शिकायत का उत्तर दिया, ''तू उस से क्यों झगड़ता है ? क्योंकि वह अपनी किसी बात का लेखा नहीं देता। क्योंकि ईश्वर तो एक क्या वरन दो बार बोलता है, परन्तु लोग उस पर चित्त नहीं लगाते'' (33:13, 14; NIV)। फिर एलीहू उन तीन अलग–अलग ढंगों की बात करने के लिए जिनसे परमेश्वर ने मनुष्य के साथ संवाद किया था आगे बढ़ा।

परमेश्वर ने दर्शनों और स्वप्नों के द्वारा बात की (33:15–18)। एलीहू ने कहा, ''स्वप्न में, वो रात को दिए हुए दर्शन में, जब मनुष्य घोर निद्रा में पड़े रहते हैं, वा बिछौने पर सोते समय, तब वह मनुष्यों के कान खोलता है, और उनकी शिक्षा पर मुहर लगाता है'' (33:15, 16)। एलीहू ने दावा किया कि स्वप्नों और दर्शनों का उद्देश्य मनुष्य को मन फिराव के लिए तैयार करना था। उसने कहा, ''जिस से वह मनुष्य को उसके संकल्प से रोके और गर्व को मनुष्य में से दूर करे। वह उसके प्राण को गढ़हे से बचाता है, और उसके जीवन को खड्ग की मार से बचाता है'' (33:17, 18)। इस बात को याद रखा जाना आवश्यक है कि एलीहू ने अय्यूब और तीनों मित्रों की बातों को बड़े ध्यान से सुना था। अय्यूब ने पहले कहा था, ''जब जब मैं सोचता हूं कि मुझे खाट पर शान्ति मिलेगी, और बिछौने पर मेरा खेद कुछ हलका होगा; तब तब तू मुझे स्वप्नों से घबरा देता, और दर्शनों से भयभीत कर देता है'' (7:13, 14)। ऐसा लगता है कि एलीहू अय्यूब को गलत साबित करने के लिए उसी के शब्दों का इस्तेमाल कर रहा था। उसका मानना था कि अय्यूब ने स्वप्नों और दर्शनों में परमेश्वर की ओर से सुना था, पर अय्यूब ने उसकी पुकार को अनसुना कर दिया था।

पुरखाओं के समय में परमेश्वर लोगों के साथ दर्शनों और स्वप्नों के द्वारा बात करता था। एक प्रसिद्ध उदाहरण याकूब का स्वप्न है जिसमें याकूब स्वर्ग तक जाती हुई एक सीढ़ी को देखता है। वहां पर परमेश्वर ने उन वायदों को फिर से दोहराया जो उसने याकूब के पिता इसहाक और उसके दादा अब्राहम के साथ किए थे (उत्पत्ति 28:10–17)। परमेश्वर ने याकूब के पुत्र

यूसुफ को भी स्वप्न दिए और उन्हें समझने की योग्यता दी; उससे जलन रखने वाले उसके भाई ने द्वेष के कारण उसे ''स्वप्न देखने वाला'' कहकर पुकारते थे (उत्पत्ति 37:19)। इतिहास में बाद में परमेश्वर ने दानिय्येल नबी को ''सब प्रकार के दर्शन और स्वप्न'' समझने की योग्यता दी (दानिय्येल 1:17)। अंत में परमेश्वर के पुत्र का संसार में प्रवेश स्वप्नों के द्वारा हुआ था जिनसे यूसुफ मरियम तथा उनके नवजात पुत्र यीशु को दिशा और सुरक्षा मिली (मत्ती 1:20–25; 2:13–15, 19–23)। पिन्तेकुत के दिन पतरस ने मसीह की कलीसिया के आरम्भ के सम्बन्ध में नबी की बात से उद्धृत किया: ''परमेश्वर कहता है, कि अन्त के दिनों में ऐसा होगा कि मैं अपना आत्मा सब मनुष्यों पर उंडेलूंगा, और तुम्हारे बेटे और तुम्हारी बेटियां भविष्यद्वाणी करेंगी, और तुम्हारे जवान दर्शन देखेंगे, और तुम्हारे पुरनिए स्वप्न देखेंगे'' (प्रेरितों 2:17)।

परमेश्वर ने ताड़ना के द्वारा बात की (33:19–22)। एलीहू ने समझाया, ''उसे ताड़ना भी होती है, कि वह अपने बिछौने पर पड़ा–पड़ा तड़पता है, और उसकी हड्डी हड्डी में लगातार झगड़ा होता है यहां तक कि उसका प्राण रोटी से, और उसका मन स्वदिष्ट भोजन से घृणा करने लगता है। उसका मांस ऐसा सूख जाता है कि दिखाई नहीं देता; और उसकी हड्डियां जो पहिले दिखाई नहीं देती थीं निकल आती हैं'' (33:19–21)। कोई शक नहीं कि एलीहू के यह बातें कहते हुए उसके मन में अय्यूब ही था। अय्यूब ने अफ़सोस किया था, ''मेरा चमड़ा काला होकर मुझ पर से गिरता जाता है, और तप के मारे मेरी हड्डियां जल गई हैं'' (30:30)। उसने यह भी शिकायत की थी कि उसकी भूख मर गई थी और उसका खाना ''घिनौना'' हो गया था (3:24; 6:7)। इसके अलावा अय्यूब ने कहा, ''मेरी खाल और मांस मेरी हड्डियों से सट गए हैं'' (19:20)। एलीहू को लगा कि अय्यूब की इतनी तकलीफ़ के साथ परमेश्वर उसके साथ बात कर रहा था, परन्तु अय्यूब सुन नहीं रहा था!

मनुष्य के कष्ट के कई कारण हैं और यह मान लेना कि हर दुःख परमेश्वर की ओर से ताड़ना है बहुत बड़ी गलती है। साफ है कि अय्यूब के मित्र यह मानने में गलत थे परन्तु कोई दूसरे छोर पर जाकर हर प्रकार के दुःख में परमेश्वर के हाथ के न होने की बात कह सकता है। इब्रानियों की पुस्तक के लेखक ने इन शब्दों के साथ कष्ट को परमेश्वर की ताड़ना के साथ जोड़ा:

> तुम दुःख को ताड़ना समझकर सह लो: परमेश्वर तुम्हें पुत्र जानकर तुम्हारे साथ बर्ताव करता है, वह कौन सा पुत्र है, जिसकी ताड़ना पिता नहीं करता। यदि वह ताड़ना जिसके भागी सब होते हैं, तुम्हारी नहीं हुई, तो तुम पुत्र नहीं, पर व्यभिचार की सन्तान ठहरे! फिर जब कि हमारे शारीरिक पिता भी हमारी ताड़ना किया करते थे, और हमने उनका आदर किया तो क्या आत्माओं के पिता के और भी अधीन रहें जिससे हम जीवित रहें। वे तो अपनी अपनी समझ के अनुसार थोड़े दिनों के लिए ताड़ना करते थे, पर वह तो हमारे लाभ के लिए करता है, कि हम भी उसकी पवित्रता के भागी हो जाएं (इब्रानियों 12:7–10)।

इसके अलावा अय्यूब ने एक दृश्य की कल्पना की है जिसमें कलीसिया के प्राचीन किसी बीमार सदस्य के पास जाकर उसके लिए प्रार्थना करते हैं। उस संदर्भ में अय्यूब ने लिखा कि यदि बीमार व्यक्ति ने ''पाप भी किए हों, तो उनकी भी क्षमा हो जाएगी'' (याकूब 5:15)। इस विचार को कि परमेश्वर ताड़ना के द्वारा, कम से कम कुछ मामलों में, बात करता है पवित्र

शास्त्र का समर्थन है।

परमेश्वर ने दूत के द्वारा बात की थी (33:23–28)। एलीहू ने अपनी बात आरम्भ की, ''यदि उसके लिये कोई बिचवई स्वर्गदूत मिले, जो हज़ार में से एक ही हो, जो भावी कहे, और जो मनुष्य को बताए कि उसके लिये क्या ठीक है'' (33:23)। इब्रानी शब्द के अनुवाद ''स्वर्गदूत'' का अर्थ ''दूत'' है और इसका अर्थ स्वर्गीय दूत या मानवीय दूत दोनों में से किसी के लिए भी हो सकता है। एलीहू ने इस दूत को मनुष्य और परमेश्वर के बीच ''बिचवई'' का काम करने की कल्पना की जिससे अंत में शारीरिक और आत्मिक स्वास्थ्य बहाल हो गया (33:24–26)। अंत में मनुष्य अपने पापों को मान लेगा और परमेश्वर के छुटकारे में आनन्द करेगा (33:27, 28)। यदि यहां पर कोई मानवीय दूत है तो एलीहू ने अय्यूब और परमेश्वर के बीच में मध्यस्थ के रूप में अपने आपको भी देखा होगा!

बाइबल के पूरे इतिहास में परमेश्वर ने मनुष्य जाति को अपनी ईश्वरीय ईच्छा को पहुंचाने के लिए ईश्वरीय दूतों का इस्तेमाल किया। कई मामलों में (स्वर्गीय दूत) थे जो मनुष्य रूप में स्वप्नों और दर्शनों में दिखाई दिए। अन्य रूप में वे मानवीय दूत भविष्यवक्ता थे जिन्हें परमेश्वर का इल्हाम प्राप्त संदेश दिया हुआ था। ऐसे दूतों का काम पाप का सामना करने, निर्देष देना और भविष्य के बारे में बताना होता था।

सारांश। इस पाठ के आरम्भ में हमने उस कथन की बात की थी जो परमेश्वर ने बोला था, ''कई बार और भांति भांति से'' (इब्रानियों 1:1; NIV)। वचन आगे कहता है, ''इन अन्तिम दिनों में हमसे पुत्र के द्वारा बातें कीं, जिसे उस ने सारी वस्तुओं का वारिस ठहराया और उसी के द्वारा उसने सारी सृष्टि की रचना की है'' (इब्रानियों 1:2; NIV)। यीशु मनुष्यजाति को परमेश्वर के संदेश की पूर्ण अभिव्यक्ति है: ''और वचन देहधारी हुआ; और अनुग्रह और सच्चाई से परिपूर्ण होकर हमारे बीच में डेरा किया, और हम ने उसकी ऐसी महिमा देखी, जैसी पिता के इकलौते की महिमा'' (यूहन्ना 1:14)।

पृथ्वी पर अपने काम को पूरा करने और स्वर्ग में उठा लिए जाने के बाद, यीशु ने सारी सच्चाई में प्रेरितों की अगुआई करने के लिए पवित्र आत्मा को भेज दिया (यूहन्ना 16:13; प्रेरितों 1:8; 2:1–4)। भविष्यवक्ताओं के साथ-साथ, प्रेरणा प्राप्त इन लोगों ने नये नियम की पुस्तकों को लिखा। पवित्र बाइबल, जिसमें पुराना और नया दोनों नियम हैं आज हमारे जीवनों में परमेश्वर की इच्छा को प्रकट करती है। यह बाकी समय के लिए उसका संदेश है। हमें चाहिए कि हम इसका अध्ययन करें, इस पर मनन करें और इस पर अमल करें। डी. स्टिवर्ट

टिप्पणियां

[1]जॉन ई. हार्टले, द *बुक ऑफ़ अय्यूब,* द न्यू इंटरनेशनल कॉमैंट्री ऑन द ओल्ड टैस्टामैंट (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1988), 437. [2]जेम्स बर्टन ऐंड थेलमा बी. कॉफ़मैन, द *बुक ऑफ़ अय्यूब* (अबिलेन, टेक्सस: एसीयू प्रैस, 1993), 285. [3]विलियम डी. रेबर्न, *ए हैंडबुक ऑन द बुक ऑफ़ अय्यूब* (न्यू यॉर्क: यूनाइटेड बाइबल सोसायटीस, 1992), 604. [4]लुडविग कोहलर और वाल्टर बामगार्टनर, द *हिब्रू ऐंड अरेमिक लेक्सिकन ऑफ़ द ओल्ड टैस्टामैंट,* स्टडी एडिशन, अनु. व सम्पा. एम. ई. जे. रिचर्डसन (बोस्टन: ब्रिल, 2001), 1:27–28. [5]रॉबर्ट एल. आल्डन, *अय्यूब,* द न्यू अमेरिकन कॉमैंट्री (पृष्ठ नहीं: ब्रॉडमैन ऐंड होल्मन

पब्लिशर्स, 1993), 322. [6]रेबर्न, 606. [7]लुडविग और बामगार्टनर, 2:1147–48. [8]मेरविन एच. पोप, *अय्यूब,* द एंकर बाइबल, अंक 15 (गार्डन सिटी, न्यू यॉर्क: डबलडे ऐंड कंपनी, Inc., 1965), 217. [9]हार्टले, 442. [10]वहीं।

[11]रेबर्न, 612. अन्य उदाहरणों के लिए देखें अय्यूब 5:19; भजन संहिता 62:11; नीतिवचन 6:16; 30:15. [12]लुडविग और बामगार्टनर, 1:557. [13]सेमुएल कॉक्स, *ए कॉमैंट्री ऑन द बुक ऑफ़ अय्यूब,* 2रा संस्क. (लंदनः केगन पॉल, ट्रेंच ऐंड कंपनी, 1885), 433. [14]आल्डन, 329. [15]NASB में आयत 32 के आरम्भ में ‘‘तब’’ शब्द जोड़ा गया है जो गलत ढंग से यह सुझाव देता है कि बोलने का अय्यूब का अवसर बाद में आया। [16]रेबर्न, 623. [17]हार्टले, 448.